बिहार के नायक सूरज नारायण सिंह पर एक ऐतिहासिक अध्ययनः1920-1973

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा के इतिहास विभाग में सिनॉप्सिस (Synopsis) प्रस्तुति हेतु

अनुसंधान पर्यवेक्षक
डा. आमिर अली खान

रिसर्च स्कॉलर
अमित सिंह

1. शोध परियोजना प्रारूप-

बिहार के नायक सूरज नारायण सिंह पर एक ऐतिहासिक अध्ययन: 1920-1973

2. परिचय-

क) परिवेश, परिवार और शिक्षा

सूरज नारायण सिंह का जन्म मिथिला के केंद्र में दरभंगा जिले के नरपत नगर गांव में बाबू गंगा प्रसाद सिंह के प्रथम पुत्र रत्न के रूप में 17 मई 1906 ई० को हुआ था। उनकी माता का नाम तनुकी देवी था। गंगा प्रसाद सिंह इलाके में मशहूर एवं लोकप्रिय जमींदार थे, उनके पास नगदी जमीन अधिक नहीं थी, अधिकतर जोत की जमीन थी। उसका प्रसार पुराने दरभंगा जिले के कुछ थोड़े से गांव में था।

प्रारंभ में सूरज बाबू की शिक्षा अपने गांव के ही प्राथमिक पाठशाला में हुई। उसके बाद उनका नामांकन मधुबनी के वाटसन उच्च विद्यालय में कराया क्या । प्रायः जन्म लेने के समय की असाधारण परिस्थितियों ने सामान्य से परे होने के लिए सूरज बाबू को पर प्रभाव डाला। बचपन से ही यह होनहार बाला स्वतंत्र चिंतन एवं घुमक्कड़ प्रकृति का था।

सूरज बचपन से ही ऊर्जा एवं ओज से संपन्न तथा राष्ट्रभक्ति की भावना से पूर्ण थे। उसी समय मैं वे अपने गांव में कांग्रेस द्वारा आयोजित प्रभात फेरियां में चले जाते तथा 'वंदे मातरम का जायकोष करते। उच्च विद्यालय में जाने के बाद वे अध्ययन के अलावा राजनीति में भी कुछ-कुछ सक्रिय होते गए। वे बिहार से आंदोलन संबंधी पर्चा, किताब आदि लाकर छात्रावास के छात्रों की बीच वितरण करते तथा उन्हें आंदोलन के लिए प्रेरित करते है। इन्हीं गतिविधियों के कारण सूरज बाबू को वहां से हटकर दरभंगा के नॉर्थ ब्रूक जिला स्कूल में नामांकन करवा दिया गया।

लेकिन कुछ ही दिनों के बाद सूरज को अपने राजनीतिक गतिविधियों के चलते उच्च विद्यालय भी छोड़ना पड़ा। बाद में उन्हें बिहार छोड़कर पढ़ने के लिए कोलकाता जाना पड़ा। कुछ पहले से ही सूरज का संपर्क कोलकाता की क्रांतिकारी से था। वहां जाने के बाद सूरज उनके संगठन से जुड़ गए। गांधी जी के असहयोग आंदोलन में छात्रों को अंग्रेजों द्वारा संचालित स्कूलों और कॉलेजों को छोड़ देने का आह्वान किया गया था। इसी कारण से सूरज ने वहां से हटकर आंदोलन के स्थगित होने पर अपना नामांकन राष्ट्रीय शिक्षण संस्था

वाराणसी की काशी विद्यापीठ में करवा लिया वहां वे पढ़ने के बहाने राजनीति में भाग लेने तथा राजनीतिक प्रशिक्षण प्राप्त करने के उद्देश्य से गए थे।

विद्यापीठ में प्रथम वर्ष की शिक्षा प्राप्त करने के बाद ही सूरज बाबू ने सत्याग्रह आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेना प्रारंभ कर दिया। सूरज बाबू का जन्म जिस क्षेत्र और परिवार में हुआ था उसने उनके बाद के राजनीतिक जीवन में किसानों तथा मजदूरों के मसीहा बनने में एक सशक्त पृष्ठभूमि का कार्य क्या। वे एक जमींदार परिवार में जन्मे थे और इसलिए किसानों एवं मजदूरों के प्रति होने वाले अत्याचारों एवं उनकी दयनीय स्थिति की अमिट छाप उनके क्रांतिकारी मस्तिष्क पर पड़ी थी। उनके घर के निकट में तीन-तीन चीनी मिली थी- सकरी, लोहट और रैयम की चीनी मिले। पहले दो के मालिक दरभंगा के महाराजा थे और तीसरी के मालिक अंग्रेज थे। बाद में सूरज बाबू ने इन तीनों मिल मजदूरों की यूनियने बनाई तथा उनके माध्यम से एक सफल मजदूर नेता के रूप में उभरे। ख) सूरज नारायण सिंह एक क्रांतिकारी के रूप में-

सूरज बाबू एक जन्मजात क्रांतिकारी थे उन्होंने मधुबनी में स्थित वाटसन उच्च विद्यालय में छात्र रहने के समय ही अपना क्रांतिकारी जीवन का प्रारंभ कर दिया था। मिथिलांचल के तिरहुत प्रमंडल में 1928 ई० में ही एच० एस० आर० ए० की एक शाखा की स्थापना हुई थी, जिसमें सूरज एक प्रमुख सदस्य बन गए थे। एक प्रख्यात मामला मुखबिर फणीन्द्रनाथ घोष की हत्या का था यू बैकुंठ शुक्ल ने भगत सिंह को फांसी होने के क्रम में किया था। सूरज बाबू ने सोए ही स्वीकार किया था की फनी घोष की हत्या की योजना में उनका हाथ था। अभिन्न साथी महान क्रांतिकारी योगेंद्र शुक्ला को भागलपुर सेंट्रल जेल से भागने में भी सूरज बाबू का हाथ था।

ख) सूरज नारायण सिंह का सविनय अवज्ञा आंदोलन में भूमिका-

1930-31 ई० मैं गांधी जी के नेतृत्व में चलने वाले सत्याग्रह आंदोलन का सूरज बाबू ने हृदय से समर्थन किया और उनके नमक सत्याग्रह में दरभंगा जिले के जत्थे के अग्रणी नेता भी बने तत्कालीन मधुबनी अनुमंडल के नामक सत्याग्रहियों के नायक भी वही थे। इसी वर्ष मादक द्रव्य निषेध आंदोलन के सिलसिले में अनेकानेक ताड़ के फॉलो एवं बालो को कटवाने के अभीयोग में उन्होंने तीन हफ्तों तक कारावास की यत्न भी सही । नरपत नगर गांव में उनका घर भी लूट गया किंतु भौतिक यातनाओं से भी थोड़ा भी विचलित नहीं हुए और जेल से छूटते ही मधुबनी में 'वालंटियर कर के जत्थेदार के रूप में देश सेवा के कार्यों में जुट

गये। 1932 ई० के सत्याग्रह में उनको छह महीने के लिए जेल जाना पड़ा और जुर्माने के रूप में ₹300 भी चुकाने पड़े। 1931 ई० में कराची कांग्रेस में सूरज बाबू ने प्रथम बार बिहार के प्रतिनिधि के रूप में हिस्सा लिया और वहां गांधी-इरविन पैक्ट के विरोध में साहस के साथ अपना मत दिया।

ग) अगस्त क्रांति के अप्रतिम सेनानी सूरज नारायण सिंह-

1 सितंबर 1939 को छिड़ा द्वितीय विश्व युद्ध एक पूर्णत: साम्राज्यवादी युद्ध के रूप में परिणत हो गया था। जर्मनी ने उस दिन पोलैंड पर चढ़ाई कर दी कांग्रेस ने भारतीय नेतृत्व की मंजूरी के अतिरिक्त विश्व युद्ध में युद्ध रत करने पर अपने प्रांतीय मंत्रीमंडलों से इस्तीफा पेश करवा दिया। अब प्रांतों में पुन: गवर्नर का ऑर्डिनेंस राज प्रारंभ हो गया। बाबू को 1940 में जेल से तो मुक्ति मिली ही थी कि तीन सप्ताह बाद भारत सुरक्षा कानून के अंतर्गत पुनः गिरफ्तार कर हजारीबाग जेल भेज दिया गया तथा वहां से बदलकर राजपूताने के रेगिस्तान में स्थित देवली कैंप जेल में ले जाया गया। उसी समय जयप्रकाश नारायण की मुंबई की ऑथर रोड प्रिजन से बदलकर देवली कैंप जेल में ले गए थे बेनीपुरी जी ने लिखा है कि जो घटना हजारीबाग में हुई उसकी नीव देवली में ही पड़ चुकी थी। कुछ समय के बाद देवली कैंप जेल में भूख हड़ताल हुई जिसका नेतृत्व जय प्रकाश नारायण ने किया। जयप्रकाश जी सूरज बाबू सहित अपने 50 साथियों के साथ देवलि जेल को तोड़ देने की मांग पर डटे रहे। जयप्रकाश बीमार पड़ गए, उन्होंने बिस्तर पकड़ लिया परंतु वे हिले नहीं। 33 दिनों के बाद जयप्रकाश को सूचना दी गई की अनशन तोड़ दें उनकी मांग सरकार ने मान ली हैं। जय प्रकाश जी एक साथ 33 दिनों के बाद सूरज बाबू ने भी अनशन तोड़ दिया। 1942 की क्रांति में सूरज बाबू के साथ घटी घटनाओं का हम जयप्रकाश जी के क्रियाकलापों से अलग करके वर्णन अथवा उसकी व्याख्या नहीं कर सकते। जयप्रकाश के साथ सूरज नारायण को बिहार की सबसे खूंखार केंद्रीय जेल हजारीबाग लाया गया। जयप्रकाश जी ने अपने साथियों के साथ मिलकर हजारीबाग जेल से पलायन करने का फैसला लिया। पलायन कांड में 6 लोग शामिल थे जयप्रकाश नारायण, सूरज नारायण सिंह, योगेंद्र शुक्ला, गुलाबचंद रामानंद मिश्रा और शालिग्राम सिंह । 8 नवंबर 1942 को दिवाली की रात को यह लोग हजारीबाग जेल से पलायन करने में सफल रहे। उसकी कुछ समय बाद 'आजाद दसता का निर्माण करने का फैसला लिया गया। आजाद दस्त का नेपाल में संगठन, प्रशिक्षण तथा क्रांति को भारत में फैलने का कार्य बगैर सूरज बाबू के संभव नहीं था। दस्त के संबंध में यह लिखना यहां आवश्यक है की, क्रांति में सूरज बाबू का जो गौरवशाली देन है इसका प्रमुख हिस्सा आजाद

दस्त से ही संबंधित है। अभी यहां आवश्यक है की आजाद दस्त का पहला काम तोड़फोड़ करना ही था, लेकिन या मान लेना कि आजाद दस्त का उद्देश्य सिर्फ तोड़फोड़ है यह गलत है तोड़फोड़ का अभिप्राय यहां है जन क्रांति के लिए उत्प्रेरक होना।

अलीबाग जय पलायन के बाद नेपाल को ही अखिल भारतीय आजाद दस्ता का केंद्र बनाया गया। कोसी नदी के कछार में बकरों का टापू नामक स्थान पर जयप्रकाश जी के रहने का प्रबंध हुआ । इस स्थान से थोड़ी दूरी पर बिहार प्रांतीय आजाद दस्त का केंद्र बनाया गया था। उसके लिए सूरज नारायण के नेतृत्व में एक प्रांतीय आजाद काउंसिल का संगठन कर लिया था। क्रांति काउंसिल ने तीन शिक्षण शिविर खोलने का निर्णय किया था। आजाद दस्ता के लिए सैनिकों की भर्ती भी जिले जिले में प्रारंभ हो गई थी। दो महीने तक नेपाल में आजाद दस्त का कार्य ठीक से चला रहा । तू इसी बीच में कुछ ऐसी भनक लगने लगे की अंग्रेजी सरकार के जवाब में आकर नेपाल सरकार भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों के विरुद्ध हो गई है। मुख्य रूप से जयप्रकाश नारायण को पकड़ने का प्रयास तेज हो गया है। इसके कुछ ही समय के बाद जयप्रकाश को लोहिया और उनके बाकी पांच साथियों के साथ पकड़ लिया था। इन लोगों को पड़कर हनुमान नगर जेल ले जाया गया। यहां सूरज बाबू की मुख्य भूमिका शुरू होती है। प्रकाश जी के पकड़े जाने की खबर सुनकर सूरज बाबू ने तुरंत अपने शहर के सैनिकों से कहा जो करने को तैयार हूं वह मेरे साथ फॉरेन रवाना हो जाए। वहां मौजूद 35 के 35 सैनिक तुरंत जाने को तैयार हो गए और उन्हें लेकर सूरज बाबू ने कुच कर दिया। आधी रात के समय छापेमारो का यह दास्ता हनुमान नगर कचहरी के करीब आ गया। एक डेढ़ घंटे की कार्रवाई के बाद सूरज सिंह जय प्रकाश के साथ बाकी साथियों को छुड़ाने में सफल रहे। बिहार में अगस्त क्रांति के अग्रदूत जयप्रकाश जी को बिहार एवं हिंदुस्तान में पुनः सक्रिय करवाने का श्रेय सूरज नारायण को जाता है।

घ) समाजवादी आंदोलन और सूरज नारायण सिंह किसानों मजदूरों की मसीहा

1946 में अंतरिम सरकार बनने के समय बिहार में भी श्री कृष्णा सिंह के प्रधानमंत्रित्व में कांग्रेसी मंत्रिमंडल का गठन हुआ। मॉडल बनने के बाद सूरज बाबू को 17 जुलाई 1946 को जेल से मुक्त कर दिया गया। सूरज नारायण जेल से निकलने के बाद समाजवादी आंदोलन को बढ़ाने तथा पार्टी के संगठनात्मक कार्य को व्यापक बनाने में सक्रिय हो गए। उन्होंने दरभंगा (पुराने जिले) को अपना कार्य क्षेत्र बनाया।

वे नित्य कहीं ना कहीं आम जनता में खासकर किसानों के बीच जाते हैं और जनसंभा को संबोधित करते थे। इसका कारण था उनके क्रांतिकारी व्यक्तित्व तथा अगस्त आंदोलन में उनके द्वारा किए गए शौर्य पूर्ण कार्यों की पृष्ठभूमि। उनकी आकर्षण से सोशलिस्ट पार्टी में आने लगे। हिंदुस्तान स्वतंत्र हुआ पर जनता की आर्थिक हालत पहले से भी खराब हो गई थी। अब सूरज बाबू का ध्यान इस ओर गया। दरभंगा में भूख प्रदर्शन करवाया तथा इस संबंध में कई सभाएं की। कांग्रेसी सरकार ने आप सूरज बाबू को गिरफ्तार कर लिया। उन्हें जेल से छुड़ाने के लिए 18 अप्रैल 1947 को 25000 किसानों ने लहरिया सराय (दरभंगा) में विराट प्रदर्शन किया। पुलिस ने बेरहमी के साथ किसानों पर लाठी चलाई सूरज बाबू को जमानत पर छोड़ दिया गया। पुनः वे चक्का खानपुर वारिसनगर किसान संघर्ष के सिलसिले में गिरफ्तार कर लिए गए। इसमें उनका डेढ़ साल की सजा मिली। 12 अगस्त 1950 को वे जेल से रिहा हुए फिर बड़े पैमाने पर सूरज बाबू ने दरभंगा जिले में बकास्त संघर्ष में बहुत जीविट से भाग लिया। उस साल सूरज बाबू ने बिहार किसान पंचायत के मुक्तापुर सम्मेलन में सभापति का पद ग्रहण किया।

स्वतंत्रता के बाद सोशलिस्ट पार्टी ने अलग से अपना किसान संगठन हिंद किसान पंचायत के नाम से संगठित किया। इसी समय में लहरिया सराय दरभंगा में जिला भर के समाजवादियों की जो किसानों के बीच कार्य कर रहे थे एक बैठक पंडित राम नंदन मिश्रा की अध्यक्षता में हुई। बैठक में दरभंगा जिला किसान पंचायत की स्थापना की गई जिसके अध्यक्ष सूरज बाबू सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए तथा मंत्री श्री दिगंबर ठाकुर को बनाया गया।

1949 में जयप्रकाश जी ने हिंद किसान पंचायत के बिहार शाखा के तत्वाधान में एक किसान मार्च आयोजित करवाया जिसमें प्रांत के सभी क्षेत्रों से किसानों को मार्च करते हुए पटना पहुंचना था। जिला अथवा प्रांतीय स्तर के किसान नेताओं को उनके साथ नेतृत्व करते हुए आना था। सूरज बाबू के नेतृत्व में दरभंगा से किसानों का एक बड़ा जनता पटना के लिए मार्च करते हुए प्रस्थान किया। सूरज बाबू के नेतृत्व में दरभंगा जिला किसान पंचायत शाखा के द्वारा महाराज दरभंगा की जमींदारी पंडौल लक्ष्मीकांत झा उसे समय के पटना उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश की जमींदारी कोईलख एवं अटहर तथा वारिसनगर थाना समस्तीपुर जिला का चक्का खानपुर का किसान आंदोलन उल्लेखनीय है।

दरभंगा ने सूरज बाबू के गांव नरपत नगर की 65 बीघा जमीन सूरज बाबू के चचेरे भाई जनार्दन सिंह के नाम से बंदोबस्त कर दी। फिर क्या सूरज बाबू ने शानदार बकास्त संघर्ष

छेड़ दिया और उनके प्रयत्न से सभी जमीन फिर से जोतने वाले किसानों को मिल गई। इसी समय में सागरपुर का ऐतिहासिक तीनकोनमा सत्याग्रह हुआ था।

सूरज बाबू का ऐतिहासिक बकाश्त आंदोलन पंडौल मधुबनी का हुआ जो बिहार के किसान आंदोलन में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है। महाराज दरभंगा के 1000 बीघे जमीन पर आंदोलन हुआ था स्वामी सहजानंद सरस्वती तथा जयप्रकाश नारायण इस संघर्ष के सिलसिले में पंडौल पधारे थे आंदोलन के फल स्वरुप बहुत सी जमीन मात्र सलामी लेकर किसानों के हाथ बंदोबस्त कर दी गई सूरज बाबू को इस आंदोलन में 2 महीने की कारावास की सजा हुई थी। प्रथम आम चुनाव के बाद 1952 के 14 अक्टूबर से सूरज बाबू ने पुनः पंडौल में ही महाराज दरभंगा की जमीन पर जमीन पुनर्वितरण आंदोलन छेड़ दिया। आंदोलन में बहुत सारे समाजवादी कार्यकर्ता एवं किसान जेल गए सारा पंडौल उस समय एक पुलिस छावनी में परिवर्तित हो गया। घुड़सवार सशस्त्र पुलि पंडौल क्षेत्र के चारों तरफ गांव में किसानों को डराने के लिए दौड़ लगा रही थी। बिहार की श्री बाबू की कांग्रेसी सरकार महाराज दरभंगा की जमीन को बचाने के लिए कृत संकल्प थी।

दरभंगा के महाराजा पंडौल क्षेत्र में हजारों बीघा जमीन पर वैज्ञानिक ढंग से खेती होती थी। चारो तरफ के गांव में किसानों के पास जमीन ना मात्र की होती थी। उनके घर के पास तक महाराज की जमीन थी और उस पर खेती होती थी स्वभावत वह इलाका गरीबी में पीस रहा था। सूरज बाबू ने समाजवादी तथा किसान आंदोलन के लिए इस क्षेत्र को सबसे अधिक अनुकूल माना। उन्होंने यहां जमीन पुनर वितरण का वाजिब प्रश्न उठाया उसके लिए एक जबरदस्त आंदोलन करने के लिए संगठन बनाकर तथा गांव-गांव के किसानों को जागरूक बनाकर आंदोलन के लिए बिगुल फूका। किसीन जन आंदोलन को किस प्रकार चलाया जाता है उसे विषय के लिए सूरज बाबू में अपूर्व क्षमता थी। सूरज सिंह ने सर्वप्रथम दरभंगा के महाराजा डॉक्टर कामेश्वर सिंह को अंग्रेजी में प्रकाशित कर एक लंबा स्मारा पत्र पंपलेट के रूप में दिया जिसमें कई बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा हुई। सूरज बाबू किसने की सच में मसीहा थे इसका उदाहरण 1965-66 में घटी विक्रमेश्वर की घटना है। कम्युनिस्ट विधायक प्रयाग लाल यादव ने करीब 50 बीघा जमीन दरभंगा राज से जाली रसीद प्राप्त कर प्रखंड विकास पदाधिकारी से बंदोबस्त करवा ली थी तथा उस पर कब्जा भी कर लिया था। उनके इस कार्य के विद्रोह में उमड़े जन आंदोलन का सफल नेतृत्व सूरज बाबू ने किया उनका सत्याग्रह सफल हुआ तथा सारी जमीन गरीबों में बांट दी गई।

ड़) मजदूर आंदोलन-

उत्तर भारत तथा खासकर पुराने दरभंगा जिले में मजदूर आंदोलन आरंभ करने का श्री सूरज बाबू को ही प्राप्त है। 1 कराकर939 में सकरी तथा लोहट की चीनी मिलों में भी हड़ताल उन्होंने मजदूरों दरमाहा बढ़ावा दिया। बाद में इन सभी मजदूर यूनियनों को उन्होंने हिंद मजदूर सभा से संबंध कराया।

एक आखरी अनशन जो की टाटी सिल्वर स्थित उषा मार्टिन कंपनी रांची में सूर्य नारायण सिंह द्वारा वहा के मजदूरों के हक और अधिकारों के लिए किया गया जिसमें कंपनी के प्रबंधक के गुंडे लठेतो ने उन्हें लाठी हाथोरो से मार कर उनकी हत्या कर दी।

3. साहित्य की समीक्षा-

प्रा० रामेश्वर प्रसाद वर्मा और डॉक्टर रामचंद्र ठाकुर के अनुसार-

बिहार में ब्रिटिश राज के उपरांत चले राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले सूर्य नारायण सिंह का योगदान अद्वितीय वह अविस्मरणीय है। द्वारा चलाए गए सविनय अवज्ञा आंदोलन करना सिर्फ सूरज बाबू ने हृदय से समर्थन किया बल्कि नमक सत्याग्रह में दरभंगा जिला के जत्थे के वे अग्रणी नेता बने रहे। 1942 में गांधी जी द्वारा चलाए गए भारत छोड़ो आंदोलन के अंतर्गत जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में संचालित आजाद दस्ता में भी सूरज बाबू ने अपने शौर्य और संगठनात्मक बाल का भी परिचय दिया।

डॉक्टर सुरेश्वर झा के अनुसार-

आजादी के फौरन बाद से सूरज नारायण सिंह ने बिहार प्रांत में समाजवादी पार्टी का मोर्चा तकरीबन पूरे उत्तर बिहार में अपने हाथों में ले लिया तथा एक महान समाजवादी नेता के रूप में उन्होंने शोषित किसानों एवं मजदूरों का सफलतापूर्वक समाजवादी नीति के अंतर्गत नेतृत्व किया।

डॉक्टर झा आगे लिखते है, वे खुद प्रथम द्वितीय एवं तृतीय लोकसभा एवं विधानसभा चुनाव में सूरज नारायण सिंह के साथ चुनाव एजेंट के हैसियत से मौजूद रहे। डॉक्टर झा लिखते हैं कि सूरज बाबू जब किसी सैद्धांतिक मुद्दे अड़ जाते थे तो उससे उन्हें कोई डिगा नहीं सकता था। इस संदर्भ में उक्त लेखक ने उदाहरण के तौर पर बताते हैं कि सूरज बाबू 1957 के होने वाले विधानसभा चुनाव में मधुबनी के पश्चिम विधानसभा चुनाव से चुनाव लड़ना चाहते

थे किंतु अपने एक शिष्य साथी रामाकांत झा के उसे क्षेत्र से चुनाव लड़ने की इच्छा के कारण उन्होंने वहां से अपनी दावेदारी हटा ली डॉक्टर झा लिखते हैं की साधारण सी बात पर इतना बड़ा त्याग दूसरा कोई भी राजनीति में रहने वाला सोच भी नहीं सकता। उक्त पंक्तियों से सूरज बाबू के महान आदर्शवादी चरित्र का पता चलता है।

4. अध्ययन का उद्देश्य-

इस अध्ययन का प्रथम उद्देश्य है कि सूरज नारायण सिंह के भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन मुख्यतः बिहार के संदर्भ में किए गए कार्यों का अवलोकनात्मक ढंग से मूल्यांकन करना है।

का द्वितीय उद्देश्य यह है कि सूरज नारायण सिंह के द्वारा आजादी के पश्चात किए गए मजदूर एवं किसानों की बेहतरी के संदर्भ में समाजवादी आंदोलन का अवलोकनात्मक ढंग से मूल्यांकन करना है।

5. शोध की भूमिका एवं महत्व-

स्वाधीनता इतिहास के अधिकांश अध्यातायों ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेताओं के इतिहास के मुख्यतः तर्ज देकर चित्रित किया है। अतः उन अछूते पहलुओं के अध्ययन एवं अनुशीलन की आवश्यकता है, जिनके सृजन में गैर कांग्रेसी देशभक्तों एवं उनके अनुनियायियो ने भी महत्वपूर्ण भूमिकाओं का निर्वहन किया और आजादी के लिए एक अलग मार्ग पर चलते हुए वैचारिक आधार तत्व एवं युक्तियों का प्रयोग कर राष्ट्रीय आंदोलन को उद्वेलित कर आजादी की राहे प्रशस्त की। साथ ही यह भी विचारणीय है कि आजाद दस्ता और हिंसक क्रांतिकारी तरीको ने अंग्रेजों को भारत छोड़ने के निर्णय में क्या मेहत्वाता निभाई। इसके अलावा सूर्य नारायण सिंह के किन कारणों के तहत उनकी हत्या हुई।

6. समस्या का विधान-

बिहार के नायक सूरज नारायण सिंह पर एक ऐतिहासिक अध्ययन: 1920-73 विषय चुनने तथा इस कार्य करने के पीछे मेरा सर्व प्रमुख उद्देश्य यह रहा कि इस विषय पर कार्य करते मुझे बिहार राज्य में सूर्य नारायण सिंह द्वारा किए गए समस्त क्रांतिकारी गतिविधियों पर जानकारी प्राप्त हो सकती है। वहीं दूसरी ओर आजाद दस्त द्वारा पुराने दरभंगा जिले जिसमें मधुबनि और समस्तीपुर भी आते थे मैं की गई गतिविधियों का अवलोकन करने का मौका

भी मिलेगा। इसके अलावा अभी तक इस विषय पर विश्वविद्यालय में सिर्फ डॉक्टर बैजनाथ यादव द्वारा काम किया गया है जो मेरी दृष्टि में उक्त घटनाओं की असंतोष जनक व्याख्या ही करता है। अतः मेरी रुचि इस कारण भी जगी एवं मुझे आशा है कि मेरे शोध कार्य से आने वाले समय में विश्वविद्यालय में सूर्य नारायण सिंह पर शोध करने वाले शोधर्तियों को मेरे इस शोध प्रबंध से पर्याप्त सहायता मिलेगी जो अभी तक मुझे नहीं मिल सकी। एक अन्य महत्वपूर्ण कारण यह है कि 1920-73 की काल अवधि भारतीय इतिहास के लिए काफी महत्वपूर्ण रही है इस अवधि में सूर्यनारायण सिंह द्वारा उक्त क्षेत्र में किए गए कार्यों ने उनको कितना लोकप्रिय बनाया एवं उनके कार्यों ने कहां तक आगे के राष्ट्रीय आंदोलन को प्रभावित किया तथा क्या सूरज नारायण सिंह द्वारा लोकनायक जयप्रकाश नारायण को हनुमान नगर जेल से छुड़ाने से ही आजाद दस्ता संपूर्ण बिहार में ब्रिटिश राज को नकोदम कर देने में सफल रहा, आदि कार्यों ने भी इस विषय पर शोध करने के अध्ययन: 1920-73 विषय चुनने तथा इस कार्य करने के पीछे मेरा सर्व प्रमुख उद्देश्य यह रहा कि इस विषय पर कार्य करते मुझे बिहार राज्य में सूर्य नारायण सिंह द्वारा किए गए समस्त क्रांतिकारी गतिविधियों पर जानकारी प्राप्त हो सकती है। वहीं दूसरी ओर आजाद दस्त द्वारा पुराने दरभंगा जिले जिसमें मधुबनि और समस्तीपुर भी आते थे मैं की गई गतिविधियों का अवलोकन करने का मौका भी मिलेगा। इसके अलावा अभी तक इस विषय पर विश्वविद्यालय में सिर्फ डॉक्टर बैजनाथ यादव द्वारा काम किया गया है जो मेरी दृष्टि में उक्त घटनाओं की असंतोष जनक व्याख्या ही करता है। अतः मेरी रुचि इस कारण भी जगी एवं मुझे आशा है कि मेरे शोध कार्य से आने वाले समय में विश्वविद्यालय में सूर्य नारायण सिंह पर शोध करने वाले शोधर्तियों को मेरे इस शोध प्रबंध से पर्याप्त सहायता मिलेगी जो अभी तक मुझे नहीं मिल सकी। एक अन्य महत्वपूर्ण कारण यह है कि 1920-73 की काल अवधि भारतीय इतिहास के लिए काफी महत्वपूर्ण रही है इस अवधि में सूर्यनारायण सिंह द्वारा उक्त क्षेत्र में किए गए कार्यों ने उनको कितना लोकप्रिय बनाया एवं उनके कार्यों ने कहां तक आगे के राष्ट्रीय आंदोलन को प्रभावित किया तथा क्या सूरज नारायण सिंह द्वारा लोकनायक जयप्रकाश नारायण को हनुमान नगर जेल से छुड़ाने से ही आजाद दस्ता संपूर्ण बिहार में ब्रिटिश राज को नकोदम कर देने में सफल रहा, आदि कार्यों ने भी इस विषय पर शोध करने के लिए मेरी रुचि उत्पन्न की।

7. अध्ययन क्षेत्र-

शोधकर्ता द्वारा किया गया यह शोध कार्य पुराने दरभंगा जिला (जिसमें मधुबनी और समस्तीपुर भी आते थे) और हनुमान नगर (सिरहा, नेपाल) में समाजवादी एवं राष्ट्रीय आंदोलन का विस्तृत अवलोकन होगा।

8. अध्ययन पद्धति-

प्रस्तावित शोध के लिए ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग होगा। इस संबंध में शोध सामग्री के लिए भारतीय अभिलेखागार, संसदीय पुस्तकालय,नेहरू मेमोरियल म्यूजियम लाइब्रेरी, प्रांतीय अभिलेखागार तथा उच्च कोटि के संस्थानों एवं पुस्तकालयों में उपलब्ध सामग्रियों को अध्ययन के विषय सूची में शामिल होगा। इस शोध विषय के लिए जिन स्थानों से प्राथमिक एवं द्वितीय स्रोतों के अध्ययन सामग्री को इकट्ठा होगा उनमें नई दिल्ली स्थित नेहरू मेमोरियल म्यूजियम एंड लाइब्रेरी, राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली, दिल्ली विश्वविद्यालय केंद्रीय पुस्तकालय पटना विश्वविद्यालय केंद्रीय पुस्तकालय, पटना विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग पुस्तकालय, के पी जायसवाल शोध संस्थान आदि प्रमुख है। इन जगहों से मैंने इस शोध विषय से संबंधित स्रोतों की जानकारी प्राप्त की तथा उन्हें अपने अध्ययन में सहायक बनाया इसके अलावा विश्वविद्यालय केंद्रीय पुस्तकालय तथा शाहिद सूरज नारायण सिंह मेमोरियल, पटना से प्राप्त स्रोतों को अध्ययन का आधार बनाया गया है।

9. परिकल्पना-

प्रमुख परिकल्पनाओं के तहत शाहिद सूरज नारायण सिंह के कार्यों का अवलोकन, उनकी अधिकार सीमा, आंदोलन के प्रमुख बिंदु राष्ट्रीय आंदोलन में उनके कार्यों का प्रभाव, उनकी मजबूरियां, सोशलिस्ट पार्टी और किसान मजदूर प्रजा पार्टी के विलय के बाद प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के कार्यों का अवलोकन । 10. अध्याय योजना-

प्रस्तावित शोध कार्य निम्नलिखित अध्यायों के अंतर्गत संपन्न किया जाएगा-

प्रथम अध्याय- परिचय

द्वितीय अध्याय- दूसरा अध्याय असहयोग आंदोलन (1920-22) से सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-34) के तहत सूरज नारायण सिंह की राजनीतिक क्रांतिकारी गतिविधियां एवं उनका परिणाम

तृतीय अध्याय- तीसरा अध्याय 1935 ई से भारत छोड़ो आंदोलन 1942-44 के तहत सूरज नारायण सिंह की राजनीतिक क्रांतिकारी गतिविधियों एवं चुनौतियां और उनके परिणाम

चतुर्थ अध्याय- बिहार में किसानों और मजदूरों की दशा एवं उनके माली हालत को बेहतर करने के लिए की गई सूरज नारायण सिंह द्वारा समाजवादी आंदोलनो का विवरण

पंचम अध्याय- 1962 में प्रथम बार मधुबनी पूर्वी विधानसभा क्षेत्र से विधायक बने सूरज नारायण सिंह की विधायक रहते हुए कार्यों की समीक्षा

षष्टम अध्याय- 1973 में रांची के टाटी सिल्वे स्थित उषा मार्टिन कंपनी में अनशन करते हुए सूरज नारायण सिंह की हत्या और उससे जुड़े तमाम पहलुओं का विश्लेषणात्मक विधि से व्याख्या

सप्तम अध्याय- उपसंहार

11. संदर्भ ग्रंथ-

1. प्रो० वर्मा, रामेश्वर प्रसाद, शहीद सूरज नारायण सिंह स्मारिका" कुदाल सेना प्रकाशक, बिहार

2. डा० झा, सुरेश्वर, सूरज नारायण सिंह स्वाधीनता संग्राम के महान योद्धा एवं समाजवादी आंदोलन के महानायक", जयप्रकाश स्मारक समिति, आगरा

3. डा० लोहिया, राममनहोर, "समाजवादी आंदोलन का नया अध्याय "

4. बेनीपुरी, श्रीरामवृक्ष, जयप्रकाश नारायण एक जीवनी"

5. बदारया, छत्रसाल रामाकांत, क्रांतिदूत', अंजुमन प्रकाशन

6. डा० प्रसाद, बिमल," द ड्रीम ऑफ अ रिवोल्यूशन अ बायोग्राफी ऑफ जयप्रकाश नारायण

7. डा० सिंह, संजय कुमार, भारतीय समाजवादी आंदोलन"

8. "दि बिहार, पटना

9. "दी सर्चलाइट", पटना

10. दी स्टेटमैन